RESEARCH EXPRESSION ISSN 2456-3455 Vol. III, Issue 4 and 5, March and September 2019

वैश्वीकरण एवं युवाओं की बदलती जीवन शैली

डॉ. सुचित्रा शर्मा
समाज शास्त्र विभाग, शासकीय विश्वनाथ यादव, तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग, (छ.ग.), भारत

शोध–सारांशः वैश्वीकरण समकालीन विश्व की विशेषताओं में से एक सबसे प्रमुख विशेषता है जो प्रायः यूरोप के प्रमुख विकसित देशों से विगत पिछले डेढ़ दशकों से प्रारम्भ होकर विश्व के विभिन्न भागों में विशेषकर तीसरी दुनिया के विकासशील देशों में तेजी से फैल रही है। जिसके परिणाम स्वरूप उनकी अर्थव्यवस्था, भाासन व्यवस्था, शिक्षा व्यवस्था, सामाजिक सांस्कृतिक जीवन शैली एवं उनकी पहचान में अनेक मूलभूत परिवर्तन परिलक्षित होने लगे हैं।

फलस्वरूप हमारे सामाजिक जीवन का प्रत्येक वर्ग चाहे वह युवा हो या वृद्ध हो, स्त्री हो या पुरूष हो, ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाला हो या नगरीय क्षेत्र में या वह किसी भी व्यवसाय का हो, सभी पर न्यूनाधिक वैश्वीकरण और नये संचार माध्यमों का प्रभाव पड़ा है। जिसके कारण उनकी व्यक्तिगत जीवन प्रणाली अर्थात् उनकी उपभोग शैली, भोजन, वस्त्राभूषण, शिक्षा, रोजगार, जीवनसाथी के चुनाव, धार्मिक कृत्यों, मनोरंजन और अवकाश के क्षणों का उपयोग, पारिवारिक संरचना, नातेदारी, कार्यपद्धतियों आदि में व्यापक परिवर्तन आया है अर्थात् वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने व्यक्ति के जीवन के प्रत्येक पक्ष, चाहें व रहन–सहन हो, वस्त्राभूशण हो, खान–पान हो, शिक्षण–प्रशिक्षण हो, व्यवसाय का चुनाव हो सभी को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से काफी प्रभावित किया है जिसके फलस्वरूप हमारे जीवन दर्शन व अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्धों में व्यापक परिवर्तन दिखाई देते हैं।

प्रस्तुत शोध–पत्र विशय से संबंधित द्वैतीयक तथ्यों के अवलोकन और विश्लषण पर आधारित है। जिसके माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने युवाओं की जीवन भौली को कितना प्रभावित किया है।

कुंजी शब्दः वैश्वीकरण, युवा, जीवनशैली, सामाजिक प्रक्रियाएँ, सामाजिक परिवर्तन।

भूमिका

वैश्वीकरण आज एक ऐसा प्रचलित भाब्द हो गया है जिसका उपयोग जीवन के हर क्षेत्र में धडल्ले से किया जा रहा है। कहीं कोई परिवर्तन परिलक्षित हो उसका संबंध वैश्वीकरण की प्रक्रिया के साथ जोड़ दिया जाता है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से यह उचित नहीं लगता कि घटना के उत्तरदायी कारणों को इस तरह संबंधित किया जाय। वैश्वीकरण का सभी पक्षों को प्रभावित करना और कारणों को जानना एक जटिल प्रक्रिया है। वैज्ञानिकों ने इसे अपने–अपने तरह से समझाने और विश्लेषित करने का प्रयास किया है। गिडिंग्स (1999) ने इसे दूर होने वाली क्रिया (Action at a Distance) हार्वे (1989) ने समय तथा स्थान के सिकुड़ने की क्रिया (Time Space Compression) ओहमें (1990) ने अर्न्तनिर्भरता को तेज गति प्रदान करने की क्रिया तथा कैसेल्स (1996) ने जाग्रति पैदा करने की क्रिया (Networking) के रूप में परिभाषित किया।

पश्चिमी विद्वान वैश्वीकरण को, व्यक्तियों को, समूहों को, समुदायों को, बाजारों को, निगमों को अन्तर्राष्ट्रीय सरकारी और गैर सरकारी संगठनों को एक जटिल सामाजिक सम्बन्धों के जाल में अर्न्तसंबंधित करने वाली प्रक्रिया कह कर परिभाषित करते हैं। परन्तु यह जहाँ एक ओर एक नई विश्व संस्कृति पैदा कर रही है वही दूसरी ओर बहुआयामी प्रक्रिया होने के कारण परम्परावादी विशिष्ट व्यवस्थाओं को तोड़ रही है, जिससे विशेषकर तीसरी दुनिया के देशों में एक उथल–पुथल पैदा हो गयी है।

वर्ममान संसार की गतिशील भाक्तियों का निर्माण हमारी ऊर्जा से ही हुआ है, परन्तु वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इन गतिशील भाक्तियों पर हम अपना नियंत्रण खो चुके हैं। निरन्तर बढ़ता ज्ञान का भंडार और उसके साथ बढ़ते नियंत्रण संबंध बहुत अधिक जटिल हो गये हैं। वैश्वीकरण इस सिकुडती दुनिया का केन्द्र है। हम ऐसा कह सकते हैं कि सामाजिक संबंधों के विश्वव्यापी विस्तार के रूप में वैश्वीकरण ने दूर दराज तक रहने वालों को इस प्रकार जोड़ा है कि किसी घटना का प्रभाव दूर तक दिखाई देता है। इस तरह वैश्वीकरण एक तरह का सांस्कृतिक एजेण्डा कहा जा सकता है, जिसे संचार साधनों ने तीव्रता दी है। योगेन्द्र सिंह ने इसे विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में ऐसी उपज माना है जो मानव इतिहास में पूर्ण रूप से नई है।

* Corresponding Author: suchitrasharma12@gmail.com

शोध का उदेश्य

वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने समाज के सभी वर्गों को प्रभावित किया है। विशेष रूप से सम्पूर्ण आयुकाल में युवावस्था ही ऐसी स्थिति होती है जब व्यक्ति का भारीरिक एवं मानसिक विकास परिपक्वता की ओर गतिशील होता है। वह अपने आस–पास के परिवर्तनों से स्वंय को प्रभावित होने से रोक नहीं पाता। परिणामस्वरूप उसका जीवन और जीवन शैली नवीन कलेवर के साथ समाज में परिलक्षित होती है। इस शोध–पत्र के माध्यम से यही जानने का प्रयास किया गया है।

युवा जीवनशैली पर वैश्वीकरण का प्रभाव

सम्पूर्ण आयु काल में युवावस्था ऐसी स्थिति है जिसमें सभी प्रकार की क्षमताएँ पनपती और पुष्पित होती है। वातावरण में जो कुछ घटता और दिखता है, वह हमारे जीवन भौली को प्रभावित करता ही है फिर वह शारीरिक, मानसिक, आर्थिक या किसी क्षेत्र का परिवर्तन क्यों न हो। हमारी क्षेत्रीय विशेषताएँ, परम्पराएँ, भाषाएँ, बोलियाँ, रहन–सहन सब प्रभावित और परिवर्तित हो रहा है।

प्रो. योगेन्द्र सिंह ने लिखा है कि "स्थानीय, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर सांस्कृतिक पहचान और वैश्वीकरण की शक्तियों के सम्मुख उनके आन्तरिक लचीलेपन ने भारत में एक लोकप्रिय संस्कृति को विकसित किया है। जिसके प्रभाव में युवाओं और ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या की दूसरी श्रेणियाँ आयी है और जिस सीमा तक पश्चिमी प्रभाव के कारण जीवन शैली में परिवर्तन हुए है, ने लोकप्रिय संस्कृति में निवास करने वाले व्यक्तियों की सांस्कृतिक विशिष्टता को चुनौती दी है।"

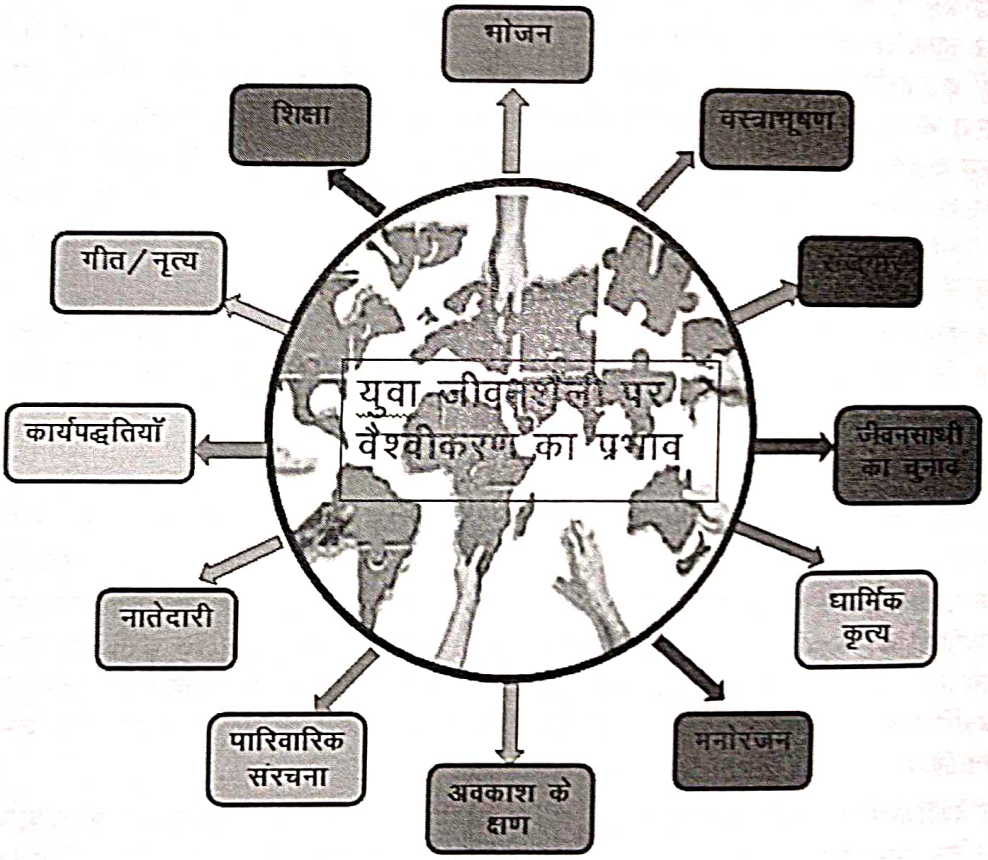

आज वैश्वीकरण ने जहाँ एक ओर हमारे परम्परागत निजी जीवन को बदलने का प्रयत्न किया है, वहीं दूसरी ओर हमारे सामाजिक जीवन को भी एक नया आयाम प्रदान किया है। इसका पता इस तथ्य से लगता है कि हमारे सामाजिक जीवन में फैली अनेक बुराईयों जैसे बालविवाह, सतीप्रथा, पर्दाप्रथा, अधिक सन्तानोत्पादन के परिणामस्वरूप बड़े परिवारों की उत्पत्ति, महिलाओं की निम्न स्थिति व अपव्ययकारी अनुष्ठानों पर व्यय, अन्धविश्वासी रीति रिवाजों, अशिक्षा आदि में काफी कमी आयी है। यह स्वाभाविक है कि जब कभी नई विचारधारा अथवा नई सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक प्रक्रियाओं का विकास होता है तो स्वाभाविक रूप से उनका प्रभाव हमारे चिन्तन एवं कार्य प्रणालियों पर पड़ता है और हमारी जीवन पद्धतियाँ दृष्टिकोण, अनिरूचियाँ और विश्वास तेजी से बदलते हैं जिससे नये सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तन घटित होते है। इन नये परिवर्तनों व चुनौतियों का सामना निर्विवाद रूप से समाज के सभी वर्गों को करना पड़ता है, परन्तु देशकाल लिंग, आयु, व्यवसाय, शिक्षा आदि सम्बन्धी भिन्नताओं के कारण हर वर्ग एक समान प्रकार से प्रत्युत्तर नहीं देता जिससे सामाजिक व्यवस्था में एक असंतुलन दृष्टिगोचर होता है।

वैश्वीकरण की प्रक्रिया हमारी स्थानीय, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय संस्कृति को प्रभावित कर रही है। वैश्वीकरण का प्रादुर्भाव हमारे देश में अचानक नहीं हुआ इसके विकास में पहले उपनिवेशवाद फिर आधुनिकीकरण की शक्तियाँ सहायक रही हैं। जिसके परिणामस्वरूप जहाँ एक तरफ अर्थव्यवस्था, दूरसंचार, शिक्षा, राजनीति आदि का अन्तर्राष्ट्रीयकरण हुआ है, वहीं दूसरी तरफ एक लोकप्रिय संस्कृति का विकास भी हुआ है जिसके कारण हमारे सामाजिक सांस्कृतिक जीवन में अनेकानेक परिवर्तन हो रहे हैं।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि इन परिवर्तनों का गहरा प्रभाव युवाओं के आदर्शों और जीवन शैली पर आव यक रूप से दृष्टिगोचर होता है। आज का युवा अपने खान–पान, वेशभूषा, सौन्दर्यप्रसाधन, गीत–संगीत, नृत्य, अवकाशकालीन क्रियाओं के प्रति अधिक जागरुक है और उसकी इस जागरुकता में पश्चिमीकरण व वैश्वीकरण की शक्तियों का प्रमुख हाथ है। आज इसी का परिणाम है कि युवा वर्ग अपने भविष्य की संभावनाओं की तलाश बाहर की तरफ कर रहा है। उदाहरणार्थ ग्रामीण युवक नगरों की तरफ आकर्षित हो रहे हैं जब कि नगरीय युवा विशेषकर प्रो. योगेन्द्र सिंह के अनुसार मध्यम वर्ग और उच्च जातियों के युवा (आरक्षण नीति के कारण सरकारी क्षेत्र में नौकरियों के सीमित हो जाने के कारण) या आकर्षक निजी क्षेत्र में रोजगार ढूंढ रहे हैं या फिर विदेशों में। अर्थव्यवस्था का वैश्वीकरण और बहुराष्ट्रीय निगमों के द्वारा सामानों के उत्पादन और सेवाओं के विकेन्द्रीकरण ने युवाओं की परिस्थितियों को पूर्णतया उलट दिया है। इस प्रकार युवाओं का भविष्य और उनका जीवन के प्रति दृष्टिकोण बदल रहा है। इसी प्रकार दूसरे अन्य पक्षों में उनका सत्ता के प्रति दृष्टिकोण बदल रहा है। चाहे सत्ता, परिवार में हो या सार्वजनिक संस्थाओं में या राज्य में।

ग्रामीण क्षेत्रों में हरित क्रान्ति के परिणामस्वरूप प्रौद्योगिक–सूचना और प्रबन्ध बाजार के कारण पुरानी पीढ़ी के माता–पिताओं की अपनी सत्ता काफी कुछ कमजोर हो गयी है। 1970 के दशक के बाद निर्णय करने की शक्ति पुरानी पीढ़ी से युवा वर्ग में हस्तान्तरित हो रही है। इस संरचनात्मक परिवर्तनों ने युवाओं को उनकी अपनी जीवन आकांक्षाओं और जीवन शैली को परिभाषित करने में अधिक स्वतंत्रता प्रदान की है। वे पारिवारिक संस्थायें जो युवाओं को आदर्शात्मक स्थायित्व प्रदान करती हैं, इस वैश्वीकरण के युग में नगरों और गाँवों दोनों में व्यापक संरचनात्मक और प्रकार्यात्मक दबाव में है। इसका परिणाम यह हो रहा है कि माता–पिता का उनके बच्चों के प्रति निष्ठा, सहायता या विवाह और परम्परात्मक अनुष्ठानों के प्राचीन पारिवारिक मूल्य समाप्त होते जा रहे हैं।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि पिछले कुछ दशकों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में हुए आश्चर्यजनक परिवर्तनों ने उद्योग, अर्थव्यवस्था, दूरसंचार, शिक्षा, राजनीति व लोकप्रिय संस्कृति के क्षेत्रों का अन्तर्राष्ट्रीयकरण कर दिया है, जिसके अनेक मूलभूत सामाजिक परिवर्तन हमारी जीवन शैली और अन्तर्वैव्यक्तिक सम्बन्धों में हो रहे हैं और यह परिणाम युवा वर्ग में तुलनात्मक रुप से ज्यादा दिखाई दे रहा है। यह कहा जा सकता है कि युवा वर्ग अधिक ऊर्जावान और संवेदनशील होता है तथा प्रायः नवीनता की ओर आसानी से आकर्षित होने लगता है जिसके परिणामस्वरूप उसके चिंतन और जीवन शैली उल्लेखनीय परिवर्तन दिखाई देते है।

संदर्भ सूची

1. Albrow, M. (1990), 'Introduction' in M. Albrow and L. Kind (eds.) *Globalization, Knowledge and Societies*, London: Sage Publication.
2. Anderson, R. (1983), *Globalization*, London: Sage Publication.
3. Jain, Amit Kumar and Parul Gupta (2009). 'Globalization: The Indian Experience', *Mainstream*, Vol. XVI, No. 8, 9 February.
4. Jens, Burtelson (2000), 'Three Concepts of Globalization", *International Sociology*, Vol. 15, No. 2, June.
5. Martha, C.E. Van Der Bly (2005), 'Globalization: A Triumph or an Ambiguity', *Current Sociology*, Vol. 53, No. 6, November.
6. Singh, Yogendra (2000), *Cultural Change in India*, Jaipur: Rawat Publications.
7. Spohn, Wiltred (1996) 'The Transformation in Global Historical and Comparative Perspectives in Social Practice and Social Transformation", ISA RC, 9 February.
8. Srinivas, M.N. (1972), Social Change in Modern India, New Delhi: Orient Longman.
9. Turner, B. (1990), 'The Two Faces of Sociology: Global or National? In M. Featherstone (ed.) Global Culture, London: Sage Publications.
10. Waters, Malcolm (2000), *Globalization*. New York: Roultedge.